दिनांक 10 दिसम्बर, 2011 को इलाहाबाद में स्कूल भवन के उद्घाटन समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

देवियों, सज्जनों और विद्यार्थियों,

मुझे आज यहाँ राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत जूनियर हाईस्कूल दादूपुर तथा माडल स्कूल भवन के शिलान्यास समारोह में आप सबके बीच आकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

वास्तव में किसी भी देश व समाज के विकास में शिक्षा का सर्वाधिक योगदान होता है। दुनिया के सभी उन्नत एवं विकसित देशों की आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति का मूल मंत्र वहाँ की शत–प्रतिशत साक्षरता और उन्नत शिक्षा–व्यवस्था ही है।

इसी प्रकार, किसी भी देश की वास्तविक प्रगति वहाँ के नागरिकों के शैक्षिक स्तर से आंकी जाती है। शिक्षा का उद्देश्य वास्तव में व्यक्ति को सही एवं गलत में अन्तर सिखाते हुए उसे सकारात्मक लक्ष्यों के प्रति समर्पित करना होता है। हमारी शिक्षा नीति में चरित्र और संस्कारों के निर्माण पर आवश्यक जोर दिया जाना चाहिए। इस संबंध में डा0 सम्पूर्णानन्द ने कहा है कि ''मन और शरीर का, चरित्र के भावों का परिष्कार हो, शिक्षा का यही प्रयोजन है''।

सुशिक्षित नागरिक ही अपना, समाज और राष्ट्र का सच्चे अर्थो में विकास कर सकते हैं। बच्चे हमारे देश के भावी नागरिक हैं और इस दृष्टि से उन्हें सुशिक्षित करना हम सबका राष्ट्रीय दायित्व है।

स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान जब असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, ठीक उसी समय महात्मा गाँधी जी ने राष्ट्रीय शिक्षा की बात उठाई। उनका विचार था कि सबसे पहले बुनियादी तालीम का प्रचार होना चाहिये। उन्हें जब भी समय मिला तो उन्होंने स्वयं इसे कार्य रूप देकर प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने तो यहाँ तक कहा था कि शिक्षा के द्वारा ही देश की शक्ल बदली जा सकती है।

शिक्षा की प्रगति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संसाधन हमारे शिक्षक हैं। हमारे शिक्षकों को अनुशासन, अध्ययन और सदाचरण का एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिये ताकि छात्र उनका अनुकरण कर सकें। भावी पीढ़ी के निर्माता होने के कारण राष्ट्र को शिक्षकों से बहुत अपेक्षायें हैं, उन पर बच्चों के चरित्र निर्माण और विकास को

नये आयाम देने की जिम्मेदारी है। यह अनुभव किया जा रहा है कि सीमित संसाधनों को दृष्टि में रखते हुये शिक्षा को बेहतर बनाने के लिये वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रणालियों का प्रयोग किया जाना चाहिये। हमें अपनी भावी पीढ़ी को आधुनिक वैज्ञानिक जानकारियों से अवगत कराते हुये उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करना चाहिये।

मैं इस अवसर पर शिक्षा से जुड़े सभी लोगों का आह्वान करता हूँ कि वे शिक्षा के समग्र उन्नयन में पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ कार्य करें।

मुझे विश्वास है कि भविष्य में यह स्कूल शिक्षा जगत में अपना एक प्रतिष्ठित स्थान बनायेगा और यहां के आदर्शवान एवं

प्रतिभावान बच्चे पढ़कर निकलेंगे, जो न केवल इस नगर, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का गौरव बढ़ायेंगे।

अंत में मैं आयोजकों को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे यहां आने का अवसर दिया। उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें बधाई देता हूँ और इस स्कूल के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

धन्यवाद – नमस्कार।